आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 3/जून 2023
Received: 09/06/2023; Accepted: 14/06/2023; Published: 24/06/2022

साठोत्तरी खंडकाव्यों में मिथक

डॉ. दीपा.म.देशपांडे
सुराना स्वायत्त डिग्री महाविद्यालय
सौथ एन्ड रोड, बेंगलुरू

डॉ. दीपा.म.देशपांडे, **साठोत्तरी खंडकाव्यों में मिथक**, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 3/अंक 3/जून 2023, (298-301)

हिन्दी साहित्य के इतिहास में कव्यों की परंपरा बहुत ही प्राचीन है। काव्य हमेशा युग चेतना को दर्शाने का प्रयास करता है। समय के साथ काव्य के रूप में जो परिवर्तन होता है, उसे खंडकाव्य की परंपरा में भी देख सकते हैं।

खडकाव्य: अर्थ एवं उत्पत्ति:

कविराज विश्वनाथ ने अपने काव्य समीक्षा ग्रंथ 'काव्य दर्पण"में सर्व प्रथम 'खंडकाव्य शब्द' का प्रयोग करते हुए इस प्रकार कहा है कि,

"खंडकाव्य वह है जो किसी घटना विशेष को लेकर लिखा गया हो"।१ रूद्रट ने इसे लघुकाव्य कहकर संबोधित किया है। खंडकाव्य का 'खंड' शब्द का अर्थ कदापि नहीं कि वह बिखरा हुआ है,प्रत्युत यह "खंड' उस अनुभूति की ओर संकेत करता है,जिसमें कवि जीवन के संपूर्ण रूप से प्रभावित न होकर आंशिक रूप से प्रभावित होता है। खंडकाव्य प्रबंध काव्य का एक भेद है ,इसमें कथाश्रित सुस्संबद्धता होती है,संपूर्ण जीवन का चित्रण न होकर किसी एक घटना विशेष का चित्रण होता है।खंडकाव्य में कथारूप लघु होता है।आकार के आधार पर खंडकाव्य की परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है।

"जिस काव्य में कुछ कथा हो,कुछ वर्णन हो,कथा का अधिक विस्तार न हो, एसे काव्य को खंडकाव्य कहा जाता है"।२

मिथक अर्थ एवं उत्पत्ति:

'मिथ' शब्द का कोशगत अर्थ पुरानी कथा, लोक कथा, लोक विश्वास, धार्मिक विश्वास, देवी-देवताओं की कथा, परंपरागत कथा, सुरों और नायकों के जीवन से युक्त काल्पनिक या फिर बनाई हुई कथा आदि माना गया है। हिन्दी में **'मिथक'** शब्द को जन्म देनेवाले आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी है। द्विवेदी जी ने **'मिथक'** शब्द का प्रयोग अँग्रेजी के **"मिथ"** शब्द की उत्पति यूनानीभषा **"माइथॉस'** से हुआ है,जिसका अर्थ

होता है , 'आप्त वचन'। हिन्दी साहित्य में पौराणिक आख्यनों के लिए **'मिथक'** शब्द का प्रयोग सर्वाधिक प्रचलित माना जाता है।

मिथक की परिभाषा:

१. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के अनुसार,

मिथक वस्तुतः उस सामूहिक मानव की भाव-निर्मात्री शक्ति की अभिव्यक्ति है, जिसे कुछ मनोविज्ञानी 'आर्किटाइक्ल इमेज (आद्यबिंब) कहकर संतोष कर लेते हैं"।३

२. सीताराम चतुर्वेदी जी के अनुसार,

"पौराणिक कथा के लिए योरोप में जो **"मिथ"** शब्द चला वह वास्तव में धार्मिक शब्द है। **'मिथ'** मूलतः ग्रीक भाषा का शब्द, यह इस भाषा का पुरातन शब्द है जिसका अर्थ है- वाणी का विषय। वाणी का विषय से तात्पर्य है एक कहानी, आख्यान जो प्राचीन काल में सत्य माने जाते थे और जो कुछ रहस्यमय तथा गोपनीय अर्थ भी देते थे"।४

परिभाषाओं को ध्यान में रखते हुए मिथक के संबंध में कहा जाता है कि, मिथक का संबंध आदिम लोक मानस से है । मिथक में घटनाएँ अलौकिक होते हुए भी मानव जीवन के लिए प्रासंगिक होती है। आधुनिक काल में विशेषः **साठोत्तरी हिन्दी कवीयों** ने अपने खंडकाव्यों में मिथकों का प्रयोग किया है । रामायण, महाभारत आदि ग्रंथों को आधार बनाकर साठोत्तरी कवियों ने नवीनतम विचारधारा से युक्त खंडकाव्यों की रचना की है।

हिन्दी के साठोत्तरी मिथकीय खंडकाव्य:

साठोत्तरी युग में मिथकीय धरातल पर लिखित कुछ ऐसी प्रभावशाली रचनएँ हैं, जैसे **'उर्वशी', 'संशय की एक रात', 'आत्मजयी', 'शबरी' तथा 'प्रवाद पर्व'** जो रामायण तथा अन्य पौराणिक स्रोतों पर आधारित रचनाएँ हैं । साठोत्तरी खंडकाव्यों में रामकथा को आधार बनाकर नरेश मेहता जी **'संशय की एक रात', 'प्रवाद पर्व', 'शबरी'** आदि रचनाओं को प्रस्तुत किया है। दिनकर जी का **'उर्वशी'**, खंडकाव्य पुरुरवा और उर्वशी के प्रसंग पर आधारित है, कुँवर नारायण जी का '**आत्मजयी**', 'कठोपनिषद्' पर आधारित है। साठोत्तरी कवियों ने मूल कथा प्रसंगों में थोडा परिवर्तन करके युगानूरूप प्रस्तुत करने का प्रयास किया है । प्रस्तुत खंडकाव्यों में मिथकीय दृष्टि से निम्नलिखित विशेषताएँ देखे जा सकते है।

नरेश मेहता जी ने **'संशय की एक रात'** के माध्यम से युद्ध की समस्या का चित्रण किया है। युद्ध विभिषिका तथा उसके परिणामों के बारे में बताने का प्रयास किया है ।इसमें आस्था-अनास्था का द्वंद्व है ,जो आज के मनुष्य की विशेषता है।प्रस्तुत काव्य में कवि की दृष्टिमानवीय मूल्यों पर केंद्रित है।संशय की एक रात जिस युग की रचना है वह विघट्न का युग है,जिसमें खंडित व्यक्तित्व, द्वंद्वात्मकता ,युद्ध और शांति आदि समस्याओं का समाधान ढूँढने का प्रयास किया गया है । **'शबरी'** में वर्ण संकरता का चित्रण किया गया है ,साथ ही कवि यह संदेश दिया है कि अपनी अस्मिता की रक्षा के लिये कोई आत्मविश्वास और प्रबल इच्छा

से कठिण परिश्रम करता है तो वह व्यक्ति सफलता प्राप्त करता है । नरेश मेहता जी ने शबरी को प्रतीक बनाकर आधुनिक नारी से जुडे हुए अस्तित्व संबंधि प्रश्न उठाया है। कवि ने मिथ्याडंबरों का विरोध किया है तथा मानवीय मूल्यों की स्थापना करने का प्रयास किया है । **"प्रवाद पर्व"** में कवि ने अभिव्यक्ति स्वतंत्रता, प्रजातंत्रिक मूल्यों पर बल दिया है। कवि ने निरंकुशता का विरोध किया है । इसमें आदर्शों को प्रस्थापित किया है।प्रवाद पर्व में आपात–बोध एवं निरंकुश्तावादी तत्वों पर प्रहार किया है तो दूसरी ओर स्वतंत्रता एवं समानता के तत्वों का समर्थन किया है। प्रस्तुत खंडकाव्य में वाणी की स्वतंत्रता पर बल दिया है। 'संशय की एक रात', 'आत्मजयी', 'शबरी' तथा 'प्रवाद पर्व' आदि में व्यक्तिवादिता, उपनिवेषवादिता, वर्ण संकरता आदि का चित्रण किया है ।

कवि दिनकरजी ने **'उर्वशी'** खंडकाव्य में नर-नारी से संबंधित विविध दृष्टिकोणों को प्रस्तुत किया है। दिनकरजी ने पुरूष के जीवन में नारी की महत्ता को उजागर करते हुए, नारी के विविध रूपों का चित्रण किया है । आधुनिक नारियों के विचारधारा को उर्वशी मिथक के माध्यम से प्रस्तुत किया है। कवि ने काम की आधुनिक समस्या, तथा उसके कारणों पर भी अपने विचार व्यक्त किये हैं। दिनकर जी की उर्वशी रचना प्रासंगिक है, कवि ने व्यक्ति के स्वभाव के बारे में यह दर्शाया है कि व्यक्ति अपने पास जो वस्तु होता है उसे छोडकर दूसरे वस्तुओं के प्रति आकर्शित होता है। उर्वशी, पुरूरवा सभी ऐसे पात्र हैं जो आधुनिक मानव में स्थित शंकाओं को, विचारों को अभिव्यक्त करते हैं।

कुँवर नारायण जी **'आत्मजयी'** खंडकाव्य में चिरंतन मूल्यों को प्रस्थापित करने का प्रयास किया है। इसमें मुख्यतः व्यक्ति की उद्विग्नता, जटिलता तथा संवेदनाओं का विश्लेषण किया गया है । पुरानी पिढ़ी तथा नयी पिढ़ी के मध्य होते आ रहे संघर्षों का चित्रण नचिकेता के मध्यम से व्यक्त किया है। आधुनिक युग में कोई भी बातें आँखें मूँदकर स्वीकार नहीं किया जाता,बल्कि तर्कों के आधार स्वीकार किया जाता है। अतः नचिकेता के मिथक के माध्यम से कुँवर नारायण जी ने मानवीय मूल्यों को पुर्नस्थापित करने का प्रयास किया है। आधुनिक मानव निरशा जनक स्थितियों से गुजर रहा है ऐसे में वह अपने मन को संतुलित करने में असफल हो रहा है, परिणाम स्वरूप वह 'आत्महत्या' का मार्ग अपना रहा है। मिथकीय दृष्टि से विश्लेषण करने पर पाँचों खंडकाव्यों में स्थित अलग-अलग विशेषताएँ सामाने आती हैं।

सठोत्तरी कवियों ने पौराणिक कथा- काव्य के माध्यम से युगीन जीवन का चित्रण किया है ।आधुनिकता बोध तथा मूल्य बोध जैसे तथ्यों पर भी प्रकाश डाला है। हिन्दी साहित्य में नयी कविता स्थान महत्वपूर्ण रहा है। नये कवियों ने मानवतावादी तथा यथार्थवादी विचारों को महत्व दिया है । लघु मानव को महत्व देना नयी कविता की विशेषता रही है ।

काव्य में कवि अपने अनुभूतियों को भाषा के माध्यम से व्यक्त करता है। उर्वशी, संशय की एक रात आत्मजयी, शबरी, प्रवाद पर्व आदि खंडकाव्यों में तत्सम, तद्भव, अरबी, फारसी पुनरावृत्ति, जोड, विपरीत अर्थवाले शब्दों का प्रयोग किया गया है। भाषा सौंदर्य के साथ-साथ साठोत्तरी खंडकाव्यों में शैलीगत वैशिष्ट्य भी विद्यमान है। उर्वशी, संशय की एक रात, आत्मजयी, शबरी, प्रवाद पर्व खंडकाव्यों में

संवादात्मक, मनोवैज्ञानिक, प्रश्न, तर्क, व्यंग्य, पूर्वदीप्ति तथा प्रतीक शैलियों का प्रयोग किया गया है। मिथकीय खंडकाव्यों में प्रतीकात्मकता प्रमुख रूप से विद्यमान है।

अंततः कहा जा सकता है कि मिथक आधुनिक युग का धरोहर है।साठोत्तरी कवियों ने मिथक के सहारे सांस्कृतिक गौरव की रक्षा करते हुए, अपनी मौलिक प्रतिभा का परिचय दिया है। मिथकों का स्थान सठोत्तरी हिन्दी खंडकाव्यों में अद्वितीय सिद्ध हुआ है।

पाद टिप्पणियाँ:

१.राजनाथ शर्म- साहित्यिक निबंध-पृ.सं-८२२

२. राजनाथ शर्म- साहित्यिक निबंध-पृ.सं-८२४

३. रश्मि कुमार- नयी कविता के मिथक काव्य- पृ.सं-१२

४. डॉ.सविता मोहन-हिन्दी काव्य में मिथक का समसामायिक संदर्भ- पृ.सं-१

संदर्भ ग्रंथ:

१.रामधारी सिंह 'दिनकर'-उर्वशी (१९६१)

२.नरेश मेहता- संशय की एक रात, (१९६२) शबरी, (१९७५) प्रवाद पर्व (१९७७)

३.कुँवर नारायण-आत्मजयी (१९६५)

४. राजनाथ शर्म- साहित्यिक निबंध

५. रश्मि कुमार- नयी कविता के मिथक काव्य

६. डॉ.सविता मोहन-हिन्दी काव्य में मिथक का समसामायिक संदर्भ

****